सन्तराम वत्स्य

देश-प्रेम की कहानियाँ

देश-प्रेम की कहानियाँ

• •

सन्तराम वत्स्य

• •

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

चित्रांकन	हरिपालत्यागी
आवरण	नारायण
प्रकाशक	नेशनल पब्लिशिंग हाउस २।३५, अन्सारी रोड, दरियागंज दिल्ली-६
मुद्रक	कुकरेजा प्रेस नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

संस्करण	प्रथम १६६६
मूल्य	दो रुपये

कथा-क्रम

१. अपनी जीभ काट दो ५
२. स्वतंत्र भारत की पहली लड़ाई ६
३. बालक राजा की वीरता १४
४. एक बालचर का साहस १७
५. दर्जी से जल-सेनापति २५
६. हालैंड का वीर बालक २६
७. लम्बार्डी का वीर बालक ३२

अपनी जीभ काट दी

सन् १८९६ की बात है। एबिसीनिया और इटली में युद्ध छिड़ा हुआ था। बहादुर एबिसीनिया निवासियों ने इटली को अपने देश से मार भगाया था। पर अब भी छिट-पुट घटनाएँ हो रही थीं। खिसियाए हुए इटली के सैनिक इक्के-दुक्के हमले बोल देते थे। पर प्रायः उन्हें मुँह की खानी पड़ती थी। एबिसीनिया वालों को अपनी स्वतंत्रता प्यारी थी और उसकी रक्षा के लिए वे बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहते थे।

एक दिन इटली की सैनिक टुकड़ी ने एबिसीनिया के एक गाँव पर धावा बोल दिया। वहाँ एबिसीनिया के थोड़े से सैनिक थे। वे बड़ी वीरता से लड़े पर अचानक आक्रमण होने के कारण तथा आक्रमणकारियों की संख्या बहुत होने के कारण वे टिक नहीं सके। उनके पांव रणभूमि से उखड़ गए। वे चाहते थे कि कुछ समय के लिए युद्ध से बचा जाए। इसके दो कारण थे। एक तो यह कि उनकी सहायता को और सैनिक पहुंच जाएँ और दूसरा यह कि मोर्चा ऐसी जगह लगाया जाए जहाँ से शत्रु को अधिक हानि पहुंचाई जा सके।

वे भाग खड़े हुए और पहाड़ी पर के एक संकरे मार्ग के पास जा ठहरे। इस पड़ाव के पास ही एक छोटा-सा गांव था। गांव के सभी युवक सेना में जा चुके थे। गांव से हटकर पहाड़ी रास्ते के पास एक अकेला घर था। यह

घर एक एबिसीनिया के सैनिक अधिकारी का था। घर के सब लोग सेना में भर्ती हो चुके थे। घर में केवल एक लड़की थी।

भागे हुए सैनिकों ने रात काटी और दूसरे दिन फिर पीछे को कूच किया। वे जानते थे कि इटली के सैनिक हमारा पीछा कर रहे हैं और वे इसी रास्ते आएंगे।

यह भोली-भाली लड़की कहीं उन्हें हमारे यहाँ ठहरने और जाने की बात न बता दे, इसलिए सेना का अधिकारी लड़की के पास गया। उसने लड़की को अच्छी तरह समझा दिया कि शत्रु सैनिकों को हमारे यहाँ ठहरने और हम किस ओर गए हैं, इस बारे में कुछ न बताए। अगर उसने बता दिया तो हम मारे जाएंगे और शत्रु गांव पर गांव लूटते फिरेंगे। इससे हमारे देश की बड़ी हानि होगी। बस, इतना कहकर वह वहां से चल दिया।

लड़की ने सारी बात ध्यान से सुनी थी और एक सैनिक अधिकारी के परिवार की लड़की होने के कारण वह जानती थी, कि उसका क्या कर्त्तव्य है। उसने मन ही मन निश्चिय किया कि शत्रुओं को कुछ नहीं बताएगी।

दूसरे दिन पीछा करते इटली के सैनिक आ पहुंचे। उनका अनुमान था कि एबिसीनिया के भागे हुए सैनिक यहीं-कहीं ठहरे होंगे। अपने अनुमान को पक्का करने के लिए वे रास्ते के पास के लड़की के घर में घुस आए। उन्होंने इधर-उधर देखा पर एक लड़की के सिवा वहां कोई नहीं था। उन्होंने लड़की से पूछ-ताछ प्रारम्भ कर दी। जब लड़की ने कहा कि मुझे कुछ पता नहीं तो उन्होंने तरह-तरह के लालच दिखाए। उसने फिर भी कुछ नहीं बताया। तब वे उसे डराने-धमकाने लगे। बेचारी अकेली जरा-सी लड़की और इतने सारे सैनिक!

वह जानती थी कि ये मुझसे भेद जानने के लिए तरह-तरह के कष्ट देंगे। बेचारी कोमल कली जैसी लड़की, पर उसका हृदय जैसे वज्र का बना हुआ था। उसने सोचा, कहीं ऐसा न हो कि इनके सताने से मैं घबरा जाऊँ और भेद बता दूँ।

तो फिर क्या करना चाहिए? उसे एक उपाय सूझ गया। बड़ा विचित्र

उपाय था। बात है कि जहां चाह होती है वहां राह निकल ही आती है। उसके मन में अपने देश का प्रेम था। वह अपने देश की हानि नहीं होने देना चाहती थी।

तो फिर उसने क्या किया ?

उसने अपनी जेब से चाकू निकाला और झट से अपनी जीभ काट डाली और सामने फेंक दी।

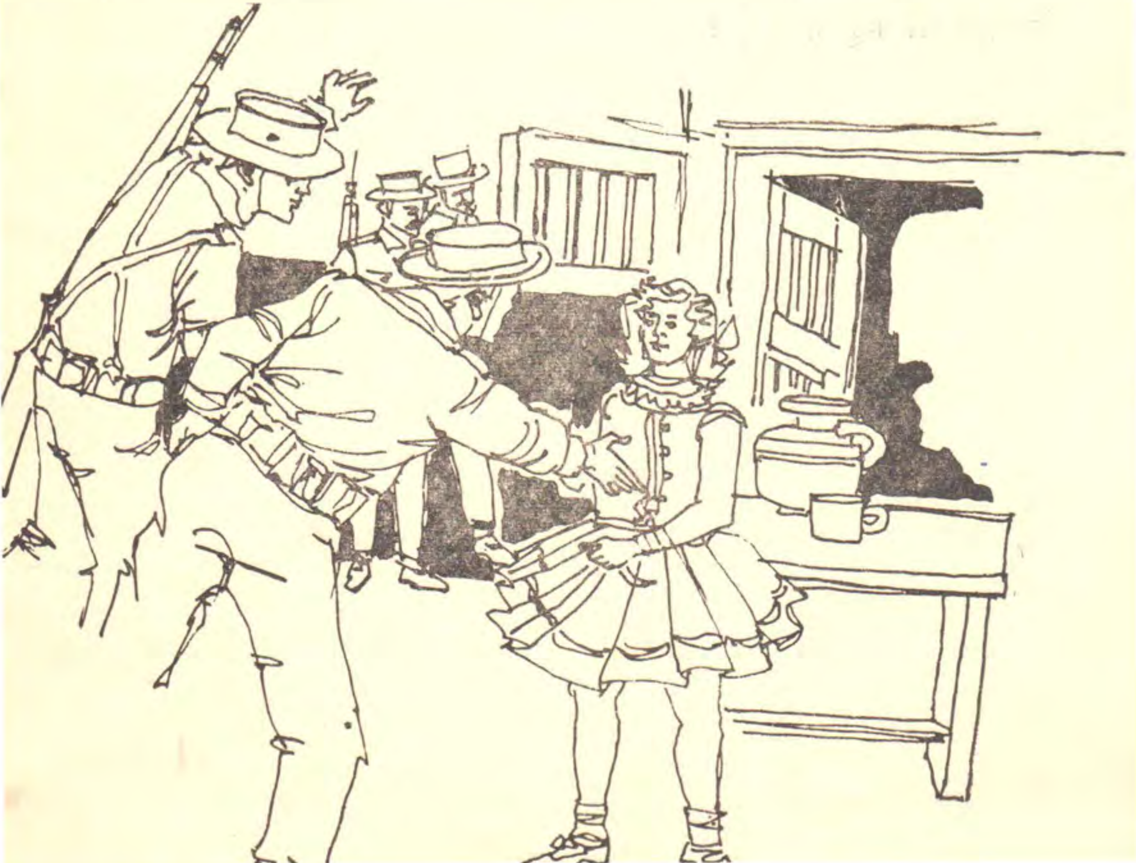

अब कोई भी उससे कुछ नहीं कहलवा सकेगा। फिर चाहे उसे कितने ही कष्ट क्यों न दिये जाएं। लड़की निश्चिन्त खड़ी थी। उसने अपनी समस्या सुलझा ली थी।

सामने खड़े शत्रु-सैनिक आंख फाड़ कर देखते ही रह गए कि यह कर क्या रही है! यह क्या हो रहा है?

क्षण भर बाद उनकी समझ में आया कि क्या मामला है! वे इस अकेली लड़की से हार गए थे। निराश हो जाते-जाते वे उसे अधमरी करके छोड़ गए। दूसरे दिन वह मर गई।

नहीं-नहीं! मरी कहां? वह तो अमर हो गई। भला देश के लिए प्राण देने वाले भी कहीं मरते हैं!

स्वतन्त्र भारत की पहली लड़ाई

स्वतंत्र भारत की पहली लड़ाई लड़ने वाले, स्वतंत्र भारत की पहली लड़ाई जीतने वाले श्रौर देशभक्ति, कर्त्तव्यपालन श्रौर नेतृत्व की भारतीय परम्परा को श्रागे बढ़ाने वाले, सर्वप्रथम परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा की वीरगाथा भारत के इतिहास में सदा श्रमर रहेगी। हमारे वीर जवान उनसे प्रेरणा लेते रहेंगे।

संसार में श्रनगिनत लोग पैदा होते श्रौर मर जाते हैं पर जिनका जीवन, लहु की एक-एक बूंद देश के काम श्राती है, उन्हीं का जन्म सार्थक है। वे श्रपनी मां का, श्रपनी मातृभूमि का गौरव बढ़ाते हैं। उनका तन-मन-धन देश के लिए श्रर्पित होता है।

सोमनाथ शर्मा का जन्म ३० जनवरी, १९२३ को जम्मू में हुश्रा था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मंसूरी श्रौर नैनीताल में हुई थी। वे ११ वर्ष की छोटी श्रायु में ही मिलिटरी कालेज में भर्ती हो गए श्रौर कालेज के सबसे श्रच्छे छात्र समझे जाने लगे। जहां देखो, वहीं सबसे श्रागे। पढ़ाई में भी श्रौर खेल-कूद में भी। श्रनुशासन में रहना, श्रपने शिक्षकों की श्राज्ञा का पालन करना, समय का सदुपयोग, मेहनत श्रौर ईमानदारी—सभी गुणों की वे खान थे।

यही वे गुण हैं जिनके द्वारा जीवन में बड़े-से-बड़ा काम किया जा सकता है।

एक साधारण लोहा होता है। उसे तपा-गला कर, कूट-पीटकर फौलाद बनाया जाता है। फौलाद को भी पाण देकर अधिक कठोर और मजबूत बना दिया जाता है। मशीनों में बहुत तापमान की जगह, बहुत दबाव की जगह और बहुत रगड़ की जगह ऐसे ही फौलाद से बने पुर्जे काम में लाए जाते हैं। ये पुर्ज़े बड़े-से-बड़े तापमान में भी पिघलते नहीं, बड़े-से-बड़े दबाव पर भी टूटते नहीं और रगड़ से घिसते नहीं। मेजर सोमनाथ शर्मा का व्यक्तित्व ऐसा ही पाणदार था।

१५ अगस्त, १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ। अक्तूबर में पाकिस्तान की सहायता से कबाइलियों ने भारत माता के मुकुट काश्मीर पर आक्रमण कर दिया। यह कठिन परीक्षा की घड़ी थी।

कबाइली बढ़ते चले आ रहे थे। देश के दूसरे भागों से काश्मीर में फौज पहुंचने में समय लगता। इसलिए हवाई जहाज से फौज उतारना तय हुआ। पर कबाइली तो हवाई अड्डे की ओर भी बढ़ते आ रहे थे। अगर वे हवाई अड्डे पर अधिकार कर लेते तो भारतीय फौज उतर नहीं सकती थी। दूसरा कोई अड्डा नहीं था। इसलिए काश्मीर को बचाने का एक ही तरीका था, जैसे भी हो हवाई अड्डे को शत्रु के हाथ में न जाने दिया जाए। यह देशभक्ति की परीक्षा की घड़ी थी। शूरवीरता की कहानी खून से लिखने की घड़ी थी। यह इतिहास बनाने की घड़ी थी। यह इतिहास बदलने की घड़ी थी। यह वह घड़ी थी, जिसके लिए वीर माताएं अपने बच्चों को जन्म देती हैं। यह वह घड़ी थी, जिसकी युद्धवीर प्रतीक्षा करते हैं। यह वह युद्ध की घड़ी थी जो भगवान कृष्ण के गीता-उपदेश के अनुसार भाग्यशाली वीरों को मिलती है। यह शत्रुरक्त से वीर पूर्वजों का तर्पण करने की घड़ी थी।

इस निर्णयात्मक घड़ी में जो सबसे पहली टुकड़ी जहाज से उतरी, उसकी कमांड मेजर सोमनाथ के हाथ थी। आंख झपकने की फुर्सत नहीं थी। मेजर शर्मा ने तुरन्त सैनिकों को टुकड़ियों में बांटकर श्रीनगर को जाने वाले मार्ग और हवाई अड्डे की सुरक्षा की व्यवस्था की। थोड़े से सैनिकों को साथ लेकर

मेजर शर्मा बडगांव नामक ग्राम की ओर बढ़े । इसी ओर से शत्रु बढ़ रहे थे । उन्हें वहीं रोक रखना आवश्यक था । नई कुमुक आने में देर थी और हवाई अड्डे की सुरक्षा पर ही हार-जीत निश्चित थी ।

भारतीय सैनिक संख्या में बहुत ही कम थे । उधर शत्रु उनसे दस गुना अधिक थे । बडगांव पहुंचकर मेजर शर्मा ने मोर्चाबन्दी कर डाली । खंदकें खोदकर मशीनगनें फिट कर दीं ।

अभी मोर्चाबन्दी पूरी भी नहीं हुई थी कि शत्रु की टुकड़ी आती दिखाईदी । भारतीय सैनिकों की कम संख्या का आभास पाकर दुश्मनों के हौसले दुगुने हो गए थे । उन्हें क्या पता था कि एक-एक भारतीय सैनिक सवा लाख के बराबर है ।

हवाई अड्डे पर थोड़े-थोड़े सैनिक उतर रहे थे । ब्रिगेडियर श्रीनगर में थे और सैन्य-संचालन कर रहे थे ।

मेजर शर्मा ब्रिगेडियर महोदय को सारी स्थिति से अवगत रखते हुए, मोर्चे पर इधर से उधर तेजी से आ-जा रहे थे । कम सैनिक, सीमित साधन, गोला-बारूद की कमी, पर वाह रे भारत माता के सपूत ! मेजर शर्मा ने सैनिकों को कह दिया था कि एक-एक गोली दुश्मन की छाती को छलनी बनाने के काम आए, बेकार न जाने पाए ।

मेजर शर्मा ने कहा, "जब तक दुश्मन बन्दूक की मार में न आ जाएं, गोली न चलाई जाए ।

यह घटना ३ नवम्बर, १९४७ की है । ज्यों ही शत्रु बन्दूक की मार में आ पहुंचा, 'फायर' का कड़कता शब्द सुनकर धांय-धांय गोलियां बरस पड़ीं । शत्रु की सेना की लहर, चट्टान की तरह दृढ़ भारतीय जवानों से टकराकर पीछे लौट गई । मेजर शर्मा प्राणों की बाजी लगाकर, गोलियों के बौछार में एक खन्दक से दूसरी, और दूसरी से तीसरी, चौथी में जा-जाकर जवानों का हौसला बढ़ा रहे थे और अन्तिम सांस तक अपने डटे रहने का संकल्प दोहरा रहे थे । उधर श्रीनगर में बैठे ब्रिगेडियर चिन्ताकुल थे । इधर तुरन्त सहायता की

आवश्यकता थी। ये युगान्तरकारी घड़ियां थीं।

चुटियाए सांप की तरह शत्रु बार-बार फुंकारता था और विषैले दांत गड़ाना चाहता था। कबाइलियों की लहर आती, भारतीय सैनिकों की चट्टान से टकराती और बिखर जाती, टूट जाती, लौट जाती।

हमारे सैनिक घायल हो रहे थे। कुछ मर चुके थे और दबाव बढ़ता जा रहा था। भारतीय सैनिक जो पहले ही कम थे, एक-एक कर घटते जा रहे थे। पर यहां प्रश्न किसी सैनिक के जीवन-मरण का नहीं था। यह तो राष्ट्र के जीवन और मृत्यु का प्रश्न था।

मेजर सोमनाथ ने ब्रिगेडियर को चिन्तामुक्त करने के लिए जो अन्तिम शब्द कहे, वे प्रत्येक देशवासी को अपने हृदय पर अंकित कर लेने चाहिए। उन्होंने कहा था :—

हम एक इंच भी पीछे नहीं हटेंगे। आखिरी सैनिक और आखिरी गोली के रहते हम शत्रु को आगे नहीं बढ़ने देंगे। हम अपने प्राण देकर भी देश की आन बचाएंगे।

मेजर शर्मा ने जो कुछ कहा था, वह कर दिखाया। मेजर शर्मा घायल हो गए थे, पर मरहम-पट्टी के बाद फिर मोर्चे पर थे। मेजर शर्मा को अपने बीच पाकर एक-एक भारतीय सैनिक अजेय दुर्ग बन गया था। मेजर शर्मा अपने संकल्प को दोहरा रहे थे। मर मिटेंगे पर हटेंगे नहीं। और प्रत्येक भारतीय सैनिक का भी यही संकल्प था।

मेजर शर्मा ने जब देखा कि हमारे अनेक जवान वीरगति को प्राप्त हुए हैं और थोड़े से बाकी रह गए हैं वे तो स्वयं गन-चालकों की सहायता करने लगे।

शत्रु की गोलाबारी जारी थी। एक बम उस गोले-बारूद पर गिरा जिसे मेजर शर्मा गन-चालकों को दे रहे थे। इस विस्फोट के फलस्वरूप वे चिर-निद्रा में सो गए। परन्तु मेजर शर्मा और उनके साथी जवान कृत-कार्य हुए थे, उनका संकल्प पूरा हुआ था। फौजी कुमुक पहुंच गई थी, श्रीनगर और समूचे काश्मीर को बचा लिया गया था।

मेजर शर्मा सफल मनोरथ और सफल काम होकर मरे थे। उनके चेहरे पर सन्तोष की झलक थी।

पूरे सैनिक सम्मान के साथ उनका अन्तिम संस्कार किया गया।

सूझ-बूझ, कर्त्तव्यनिष्ठ और शौर्य के प्रकाशस्तम्भ मेजर शर्मा आज हमारे बीच नहीं हैं पर मां के इस सपूत का यश सदा अमर रहेगा।

उन्हें मरने के बाद परमवीर-चक्र से सम्मानित करके, परमवीर-चक्र का ही सम्मान बढ़ा है।

बालक राजा की वीरता

सन् १८५७ में अंग्रेजों की दासता से भारत माता को मुक्त करने के लिए गदर मचा था।

हैदराबाद के पास ही जेटापुर नाम की एक छोटी-सी रियासत थी। वहां का राजा अभी किशोर ही था। उसने भी अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी। उसने अंग्रेजों से मोर्चा लेने के लिए अरब और रोहिल्ला पठानों की एक फौज खड़ी की थी।

पर देश का दुर्भाग्य यह था कि अनेक रियासतें इस लड़ाई में अंग्रेजों का साथ दे रही थीं। हैदराबाद का निजाम भी अंग्रेजों का पिट्ठू था। वह अंग्रेजों से मिलकर गदर को कुचलने में लगा हुआ था।

सन् १८५८ के फरवरी मास में जेटापुर का राजा हैदराबाद आया हुआ था। निजाम के मंत्री सालारजंग को पता लग गया। उसने अंग्रेजों का कृपा-पात्र बनने के लिए बालक राजा को गिरफ्तार कर लिया और अंग्रेजों को सौंप दिया।

कर्नल मेटोज टेलर नामक एक अंग्रेज अधिकारी की बालक राजा के साथ बड़ी मित्रता थी। बालक राजा इस अंग्रेज अधिकारी को 'अप्पा' कहकर पुकारता था।

मेटोज टेलर जेल में अपने मित्र बालक राजा से मिलने गया। यह अंग्रेज अधिकारी अपना प्रेम जताकर वास्तव में गदर में भाग लेने वालों के नाम जानना चाहता था। पर बालक राजा ने औरों के नाम बताने से साफ मना कर दिया। उसने कहा, "अप्पा, यह मत समझिए कि मैं अपनी जान बचाने के लिए गिड़-गिड़ाऊँगा। मैं दूसरों की दया पर जीना नहीं चाहता। और यह भी आशा मत करना कि मैं अपने साथियों के नाम आपको बताऊंगा। हमने जो कुछ किया है, सोच-समझकर किया है। मुझे अपने प्राणों का रत्ती भर भी मोह नहीं है।"

कुछ दिनों बाद मेटोज़ टेलर फिर जेल में बालक राजा से मिलने गया।

उसने सोचा, बालक राजा सम्भवतः मौत के डर से कुछ बता दे। उसने राजा से कहा, "अगर गदर में भाग लेने वाले अपने साथियों के नाम बता दो तो तुम्हें छोड़ देने की सिफारिश कर सकता हूं।"

इस पर बालक राजा ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, "मैं मौत के डर से विश्वासघात नहीं करूंगा। मुझे फांसी हो या तोप से उड़ा दिया जाय, पर मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है। विश्वासघात का कलंक अपने माथे पर नहीं लगाऊंगा।"

कर्नल टेलर ने कहा, "अगर कुछ नहीं बताओगे तो तुम्हें शीघ्र ही मौत का दण्ड दिया जाएगा।"

इस पर बालक राजा ने कर्नल टेलर से कहा, "मेरे लिए एक काम कीजिए। मैं चाहता हूं कि मुझे फांसी पर न लटका कर तोप से उड़ाया जाय।"

कर्नल टेलर की सिफारिश से बालक राजा को प्राणदण्ड न देकर काले पानी की सजा दी गई।

जब उसे काले पानी ले जाया जा रहा था तो बालक राजा ने हंसी-हंसी में अपने अंग्रेज पहरेदार की बन्दूक ले ली और अपने ऊपर गोली दाग ली। गोली दागने से पहले उसने कहा कि मैं कैद और काले पानी की अपेक्षा मौत को ज्यादा अच्छा समझता हूं।

स्वतंत्रता के लिए मौत को लजाने वाले इस बालक राजा को हमारा सौ-सौ प्रणाम।

एक बालचर का साहस

यह सच्ची घटना प्रथम विश्व-युद्ध के समय की है। प्रथम विश्व-युद्ध सन् १९१४ में प्रारम्भ हुआ था।

जर्मन सेनाओं ने फ्रांस पर आक्रमण कर दिया था। उनकी सेना बढ़ती चली आ रही थी। बालक हेनरी अपनी पाठशाला के बालचर दल का मुखिया था। वह अपने साथियों को साथ लेकर फ्राँस के प्रधान सेनापति के पास पहुंचा और प्रार्थना की कि देश पर संकट के समय पर हमारे योग्य कोई काम बताया जाए।

सेनापति ने सोच-विचार कर देखा कि ये बालक किस काम में उपयोगी हो सकते हैं। उसने मन ही मन निर्णय किया कि इनसे गुप्त समाचार भेजने तथा शत्रु की टोह लगाने का काम लिया जा सकता है।

कुछ दिनों बाद पता चला कि जर्मनी की सेना बढ़ती चली आ रही है।

सेनापति ने बालचर दल के नेता को बुलाकर शत्रु सेना की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए कहा।

हेनरी ने आदेश मिलते ही साइकिल उठाई और जिस ओर से शत्रु सेना बढ़ी चली आ रही थी, उसी ओर चल दिया।

वह बताए गए स्थान से अभी कोई दस मील दूर था कि उसे कुछ

आहट सुनाई दी। उसने साइकिल एक ओर खड़ी कर दी और धरती से कान लगाकर आहट सुनने लगा। उसे पता चल गया कि बहुत-से लोग इसी ओर आ रहे हैं।

उसने साइकिल उठाई और रास्ता छोड़कर एक झाड़ी में जा छिपा। आहट साफ़ और साफ़ सुनाई देने लगी। कुछ ही देर बाद उसे सेना आती दिखाई देने लगी।

जब सैनिक उसके पास से जा रहे थे, किसी ने जोर से 'ठहरो' यह आदेश दिया। सैनिक जहाँ थे वहीं रुक गए।

शाम का धुंधलका छा गया था। जर्मन सेना ने वहीं पड़ाव डाल दिया। तम्बू गाड़ दिए गए और खाने-पीने की तैयारी होने लगी। खा-पीकर थके-हारे सैनिक सोने की तैयारी करने लगे।

हेनरी जिस झाड़ी में छिपा था उसके पास ही किसी सैनिक अधिकारी का तम्बू था। उसमें बैठे दो अधिकारी धीरे-धीरे कुछ गंभीर बातें कर रहे थे। हेनरी उनकी वर्दी और दूसरे निशानों से समझ गया कि वे कोई बड़े अधिकारी हैं। वह उनकी बातचीत सुनने की अपनी उत्सुकता को नहीं रोक सका। बिना ज़रा भी आवाज़ किये, खिसकते-खिसकते वह उनके पास जा पहुंचा। वह जानता था कि यह कितने खतरे का काम है। पर वीर बालचर खतरों से कब डरते हैं। प्राणों की बाज़ी लगाकर वह चुपचाप सुनता-देखता रहा।

उसने भाँप लिया कि ये तो युद्ध की ही योजना बना रहे हैं। इतने में उनमें से एक तो चला गया और दूसरा कुछ लिखने लगा। हेनरी ने अनुमान लगा लिया कि ये अपनी योजना की सूचना मुख्य कार्यालय को भेजने की तैयारी कर रहें हैं।

उसने सोचा कि यदि यह कागज़ हाथ आ जाए तो हमारे सेनापति को इनकी योजना का पता लग सकता है। शत्रु की युद्ध-योजना का पता लग जाए तो फिर क्या कहने हैं! पहले से ही बचाव का प्रबन्ध किया जा

सकता है । शत्रु को भारी हानि पहुंचाई जा सकती है और उसकी योजना नष्ट की जा सकती है ।

कुछ देर बाद सैनिक अधिकारी लिखे कागज़ को वहीं छोड़कर, डाक ले जाने वाले को बुलाने बाहर चला गया । हेनरी के लिए यह बड़ा अच्छा अवसर था । वह फुर्ती से तम्बू में घुसा और कागज़ उठाकर बाहर निकल आया । कागज को अच्छी तरह संभाल कर उसने साइकिल उठाई और चुपचाप भाग खड़ा हुआ । वह साइकिल को तेजी से चलाने लगा ।

बालचर हेनरी अपने सेनापति के पास आ पहुंचा । सारी बातें सेनापति को बताई और वह कागज़ भी दे दिया । पढ़-सुनकर सेनापति का चेहरा प्रसन्नता से खिल गया ।

सेनापति ने हेनरी की ओर देखकर कहा, "आपने यह काम करके मातृ-भूमि की बड़ी सेवा की है । पर अभी भी कुछ काम बाकी है । ये कागज़ शीघ्र से शीघ्र प्रधान सेनापति के पास पहुंचने चाहिए । मुझे पूरा विश्वास है कि इस काम को भी आप सफलता से कर दिखाएंगे । आपने प्रमाणित कर दिया है कि आप साहसी तरुण हैं । आप तुरन्त चले जाइए और पत्र को यथा स्थान पहुंचा दीजिए । इस बात का ध्यान रखें कि यह शत्रु के हाथ न आए ।"

हेनरी ने पूरे आत्मविश्वास के साथ उत्तर दिया, "मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि यह पत्र प्रधान सेनापति के अतिरिक्त किसी को नहीं दूंगा । इस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए मैं अपने प्राणों की भी परवाह नहीं करूंगा । बालचर की प्रतिज्ञा कभी झूठी नहीं होगी ।"

सेनापति ने पत्र हेनरी को सौंप दिया । उसने पत्र में लिखी बातों को अच्छी तरह याद कर लिया जिससे यदि पत्र को नष्ट भी करना पड़े तो भी पत्र की सारी बातें प्रधान सेनापति को जबानी बता सके ।

इसके बाद उसने एक बन्दूक, कुछ कारतूस और खाने का सामान लेकर, साइकिल पर अपनी यात्रा आरंभ कर दी ।

पत्र को उसने साइकिल के पोले डंडे के भीतर छिपा लिया जिससे तलाशी लेने पर भी किसी को न मिले। वह तीर-सी तेज गति से साइकिल चला रहा था। वह पूरी तरह से चौकन्ना था कि कहीं ग्रास-पास शत्रु तो नहीं हैं। जब उसे कोई बीस मील जाना रह गया तो बड़ी कड़कती ग्रावाज में उसने 'ठहरो' यह ग्रादेश सुना। दूसरी बार की चेतावनी में उसे यह धमकी भी दी गई कि यदि "रुकोगे नहीं तो गोली मार दी जाएगी।"

हेनरी समभ गया कि ग्रब भाग निकलना कठिन है। वह साइकिल से

उतर कर खड़ा हो गया। तुरन्त उसे जर्मन सैनिकों ने पकड़ लिया और साइकिल समेत सेनापति के सामने उपस्थित किया।

सेनापति ने इस तरुण को ध्यान से देखा। फिर प्रश्न किया, "क्या तुम्हारे पास कोई कागज-पत्र है ?"

"जी हाँ।" हेनरी ने निडर होकर उत्तर दिया। वह बालचर था और बालचर कभी झूठ नहीं बोलता।

"अच्छा, वे कागज़-पत्र निकाल कहाँ रखे हैं।" सेनापति ने कहा।

"नहीं श्रीमान्, यह असंभव है। उन्हें मैं नहीं दे सकता।" हेनरी ने स्पष्ट उत्तर दिया।

"देखो, देर मत करो। इस समय तुम हमारे बन्दी हो। कागज़-पत्र तुमसे छीन लिए जाएंगे। यदि ज्यादा चालाकी दिखाओगे तो गोली मार दी जाएगी।"

"जैसा आप ठीक समझें। गोली मारने की धमकी से आप मुझे मेरे कर्त्तव्य से नहीं डिगा सकते। देशद्रोही बनने से तो मौत ही अच्छी।" हेनरी ने दृढ़ता से कहा।

"बहुत अच्छा! तुम्हारी अकड़ अभी दूर किए देता हूं। देखता हूं तुम्हारा देश-प्रेम कितनी देर टिकता है। जब तुम्हें तरह-तरह के कष्ट दिए जाएंगे तो होश ठिकाने आ जाएंगे।" सेनापति ने फिर डराया और सन्तरी को बुलाकर आदेश दिया कि इस छोकरे की तलाशी लो फिर अच्छी तरह बांधकर इसपर पहरा बिठा दो।

हेनरी ने जल्दी पहुंचने की चिन्ता में रास्ते में साइकिल पर बंधा खाना भी नहीं खाया था। तेजी से साइकिल दौड़ाने के कारण थक भी गया था। पर उसे सबसे ज्यादा दुःख और चिन्ता इस बात की थी कि प्रधान सेनापति को समय पर सूचना नहीं पहुंच सकेगी। जो काम उसे सोंपा गया था, वह अभी अधूरा था और उसके पूरा होने की आशा भी नहीं थी। वह भूख-प्यास और

थकान भूलकर इसी चिन्ता में घुला जा रहा था। वह यह भी सोच रहा था कि इस विपत्ति से कैसे छुटकारा मिले।

वह रस्सियों से जकड़ा पड़ा था। पीड़ा से उसका अंग-अंग दुःख रहा था। भूख-प्यास अलग सता रही थी। सूरज छिप चुका था। चारों ओर अंधेरा घिर आया था। बाहर के अंधेरे के साथ-साथ उसके मन में निराशा का अंधेरा भी बढ़ता जा रहा था।

दो सिपाही वहां पहरा देने के लिए खड़े थे। हेनरी ने बालचर के रूप में गांठ बांधना और खोलना सीखा हुआ था। अंधेरे का लाभ उठाकर वह धीरे-धीरे गांठों को खोलने का प्रयत्न करने लगा। अन्त में उसने सारी रस्सियां खोल डालीं पर उनको अपने ऊपर इस तरह पड़ा रहने दिया कि जैसे वह बंधा पड़ा है। संयोग से आकाश में बादल छा गए और तेज हवा चलने लगी। अंधेरे और हवा की सांय-सांय आवाज का लाभ उठाकर उसने ज़रा-ज़रा सरकना शुरू किया। वह कोई दस फुट दूर रखी साइकिल की ओर सरक रहा था। आधी रात होने को आई। अब भी साइकिल तीन-चार फुट दूर थी। एक झपट्टे के साथ उसने साइकिल उठाई और भाग खड़ा हुआ।

कुछ आहट पाकर पहरे के सिपाही चौकन्ने हुए तो हेनरी उन्हें दिखाई नहीं दिया। उन्होंने शोर मचाया और कई सैनिक पीछा करने के लिए दनादन गोलियां दागते हुए इधर-उधर भागने लगे। पर अन्धेरे और आंधी के कारण हेनरी उनके हाथ नहीं लगा।

इस विपत्ति से छुटकारा मिलने पर हेनरी ने ईश्वर का लाख-लाख धन्यवाद किया। वह तेजी से साइकिल दौड़ाता हुआ अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता गया। कोई दो घंटे की दौड़ के बाद उसे फ्रांसीसी भाषा में 'ठहरो, कौन है ?' की कड़कती आवाज़ सुनाई दी। वह समझ गया कि अपने सैनिक पड़ाव में पहुंच गया हूं। वह रुक गया। और पहरेदार सिपाही से उसने फ्रांसीसी भाषा में अपना परिचय दिया। एक सन्तरी उसे प्रधान सेनापति के पास ले गया।

हेनरी फांस के प्रधान सेनापति जाफ़र के सामने खड़ा था।

प्रधान सेनापति ने हेनरी के दिए हुए कागज-पत्र बड़े ध्यान से पढ़े! ज्यों-ज्यों वह पढ़ता गया उसका चेहरा गंभीर होता गया। उसने कई सेना-अधिकारियों को कूच करने और मोर्चाबन्दी के आदेश दिए। इसके बाद हेनरी की ओर मुंह करके बोला, "इन महत्वपूर्ण कागजों के कारण मुझे अपनी योजना में काफी परिवर्तन करना पड़ा। सेनापति महोदय ने यह भी लिखा है कि इन कागजों को हथियाने का सारा श्रेय आपको है। अब मुझे कागजों को हथियाने की कहानी सुनाइए।"

हेंनरी ने आदि से अन्त तक की सारी बातें बता दीं। इस पर प्रधान सेनापति जाफर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने हेनरी की प्रशंसा करते हुए कहा, "आप बड़े साहसी और वीर युवक हैं। कर्त्तव्य-पालन करने में आप बेजोड़ हैं। सूझ-बूझ भी आपकी कमाल की है। इस छोटी उमर में ही आपने बड़ों से बढ़कर काम कर दिखाया है। मैं चाहता हूं कि आपको कोई सैनिक पद प्रदान करूं। पर आपकी छोटी उमर के कारण संभवतः कोई बड़ा पद नहीं दे पाऊंगा। जो भी होगा देखा जायगा। जब तक मैं आज्ञा न दूं, यहीं पर रहिए।"

हेनरी को अपनी सच्ची प्रशंसा सुनकर प्रसन्नना तो हुई पर इस समय वह बहुत भूखा-प्यासा और थका हुआ था। उसे बहुत कमजोरी मालूम हो रही थी। खा-पीकर वह सो गया तो दूसरे ही दिन जागा। स्नान आदि करने के बाद उसने कपड़े पहने तो अधिकारी उसे परेड के मैदान में ले गए। वहां सारी सेना पहले से ही सलामी के लिए तैयार खड़ी थी। उसके वहां पहुंचते ही प्रधान सेनापति ने भाषण देना आरंभ किया। भाषण का सार यही था कि इस तरुण ने प्राणों की बाजी लगाकर, बड़ी सूझ-बूझ के साथ कर्त्तव्य का पालन किया है। यदि यह तरुण ऐसा न करता तो देश की स्वतन्त्रता खतरे में पड़ जाती। आज सारा फ्रांस राष्ट्र इस तरुण के उपकार के लिए कृतज्ञ है।

इसके बाद प्रधान सेनापति ने उसकी छाती पर 'लीज़न ऑफ आनर'

नामक पदक लगा दिया। यह पदक हमारे देश के 'परमवीर चक्र' पदक के समान है। प्रत्येक फ्रांसीसी सैनिक या सेनापति इस पदक को पाने के लिए लालायित रहता है।

अपना इतना बड़ा सम्मान होते देखकर पहले तो उसने नम्रता पूर्वक धन्यवाद दिया। फिर बोला, "मैंने केवल अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। और कर्त्तव्य का पालन करना प्रत्येक बालचर का धर्म है। जब मैं बालचर बना था, तो मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं ईश्वर और देश की सेवा में कभी पीछे नहीं रहूंगा। बस, मैंने उस प्रतिज्ञा का पालन भर किया।"

दर्ज़ी से जल-सेनापति

कोई तीन सौ वर्ष पुरानी बात है। एक अंग्रेज़ बालक वाइट द्वीप के वान चर्च नामक नगर में दर्ज़ी की दुकान पर काम करता था। एक दिन उसका मालिक किसी काम से कहीं चला गया। वह बालक हाथ का सुई-धागा छोड़कर, सामने दूर तक लहराते सागर को निहारने लगा।

बालक के माता-पिता बचपन में ही मर गए थे। अनाथालय में उसका पालन-पोषण हुआ था और अब अनाथालय वालों ने उसे दर्ज़ी के पास काम सीखने बिठा दिया था। पर बालक का मन इस काम में नहीं लगता था। उसका जी करता कि किसी जहाज़ पर बैठ कर यहां-वहां घूमता रहे।

वह देर तक सागर की ओर देखता रहा। उसे दूर से आते जहाज़ों के मस्तूल दिखाई देने लगे। फिर जहाजों के ऊपरी हिस्से और बाद में समुद्र की छाती को चीरते हुए बड़े-बड़े जहाज दिखाई दिए। अब बालक से दुकान पर बैठा नहीं गया। वह सागर तट की ओर दौड़ पड़ा। वहां एक छोटी-सी नाव खड़ी थी। यह बालक उस पर चढ़ गया। नौका लंगर डाले जहाज़ के पास जा पहुँची। यह जंगी जहाज़ों का बेड़ा था। फ्रांस और इंग्लैंड के बीच लड़ाई छिड़ी हुई थी। लोग जंगी जहाज़ों पर नौकरी करने के लिए तैयार नहीं होते थे। बालक जल-सेनापति के सामने जा उपस्थित हुआ। वह भर्ती होने के लिए बार-

बार आग्रह करने लगा। पहले तो उसकी छोटी उमर को देखकर जल-सेनापति ने मना कर दिया पर बाद में स्वीकृति दे दी।

इंग्लैंड के ये जहाज़ दूसरे ही दिन फ्रांस के जंगी जहाज़ों से लड़ाई में उलझ गए। सामना होते ही तोपें गोले बरसाने लगीं। चारों ओर धमाकों का शोर, मच गया। धुएं के बादल उठने लगे और गोलियों की दनादन होने लगी।

यह बालक अभी कल ही जहाज़ पर आया था। लड़ाई का तो वह नाम भर जानता था। पर कितने आश्चर्य की बात है कि वह जरा भर भी नहीं घबराया। अपने अधिकारी की आज्ञानुसार फुर्ती से अपना काम करता रहा। जब पुराने-पुराने सैनिकों के पित्ते पानी हो रहे थे, वह मस्ती से अपना काम कर रहा था।

लड़ाई चलती रही । तोपें गोले बरसाती रहीं । गोलियां दनादन चलती रहीं । धमाकों से कानों के पर्दे फटे जाते थे । बारूद की गन्ध और धुएं से नाक और आंखें बेकार हुई जाती थीं । पर हार-जीत का कोई फैसला नहीं हो रहा था । इस बालक की समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि लड़ाई का फैसला कब और कैसे होगा । उसने एक जहाज़ी से पूछ ही लिया, "हम लोगों को कैसे पता चलेगा कि शत्रु हार गए ?"

उस पुराने जहाज़ी ने शत्रु जहाज़ के मस्तूल पर फहराते फ्रांसीसी झंडे को उंगली से दिखाते हुए कहा, "जब सामने का वह झंडा नीचे उतार लिया जाएगा, हम समझ जाएंगे कि शत्रु हार गए ।"

"बस, इतनी-सी बात से ही हार-जीत का फैसला हो जाएगा ?" बालक ने आश्चर्य से पूछा ।

"हां ।" जहाज़ी ने निश्चयात्मक स्वर उत्तर दिया ।

यह उत्तर सुनते ही बालक वहां से ओझल हो गया ।

उन दिनों जहाज़ एक-दूसरे से सटकर लड़ते थे । दूसरे पक्ष के जहाज़ के चारों ओर चक्कर काटते हुए जहाजों पर से गोले-गोलियां बरसाई जाती थीं । सैनिक शत्रु के जहाज पर चढ़ कर बल पूर्वक अधिकार करने का प्रयत्न करते थे । फ्रांस के जल-सेनापति का जहाज इस समय इस बालक वाले जहाज़ के पास ही था । दोनों में घमासान लड़ाई जारी थी ।

यह बालक अपने जहाज़ से कूद कर शत्रु-पक्ष के जहाज पर जा चढ़ा । फिर जहाज से झूलती रस्सियों की सीढ़ी से वह मस्तूल पर जा चढ़ा । दोनों ओर से अन्धाधुंध गोलियां चल रही थीं । पर बालक था कि इसे गोलियों की जरा भी परवाह नहीं थी ।

संभवतः अपने-अपने काम में लगे जहाजियों में से किसी की भी नज़र इस बालक पर नहीं पड़ी । यही कारण था कि वह मस्तूल पर चढ़कर शत्रु-पक्ष के झंडे को उतारने में सफल हो गया । यही नहीं, वह उस झंडे को लेकर अपने

जहाज़ पर वापस भी आ गया। वह नन्हा बालक दोनों सेनाओं की गोलियों और नज़रों से बचा रहा।

फ्रांसीसी जहाज़ों ने देखा, हमारे जहाज़ पर झंडा नहीं है। उन्होंने समझा, हमारे सेनापति ने हार मान ली। उनके हौसले पस्त हो गए। तोपचियों ने गोले दागने बन्द कर दिए। उन्होंने एक तरह से लड़ाई बन्द कर दी।

अंग्रेजी सैनिकों ने जब देखा कि शत्रु-पक्ष का झंडा गायब है तो उनके हौसले दूने हो गए। उन्होंने समझा, शत्रु ने हार मान ली। जीत की उमंग और लूट के विचार से वे फ्रांसीसी जहाज़ों पर कूद पड़े। फ्रांसीसी भौचक्के रह गए कि यह एकाएक हो क्या गया ! पर वे बाजी हार चुके थे। अंग्रेजों ने उन जहाज़ों पर अधिकार कर लिया।

बालक की प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। वह हाथ में फ्रांसीसी झंडा लिए अपने लोगों को बताने लगा कि यह झंडा मैं उतार कर लाया हूं।

जब इस बात की सूचना अंग्रेज जल-सेनापति को मिली कि कल भर्ती किए गए बालक ने यह आश्चर्यजनक काम किया है तो उसने इस बालक को अपने पास बुलाया और सारी घटना सुनाने को कहा।

घटना सुनने के बाद उसने बालक की पीठ थपथपाई और उसे पुरस्कार दिया। उसी दिन उसकी पद-वृद्धि भी कर दी।

अब तो यह बालक ज्यों-ज्यों उमर में बड़ा होता गया, लगातार उन्नति करता गया। एक दिन ऐसा भी आया कि वह 'जल-सेनापति' के सबसे ऊंचे पद पर जा पहुंचा। उसका नाम हाप्सन था।

अंग्रेजी इतिहास में 'जल-सेनापति हाप्सन' का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है।

हालैंड का वीर बालक

यह कहानी प्रारंभ करने से पहले हालैंड के बारे में कुछ बताना आवश्यक है। हालैंड एक समतल देश है और कई स्थानों पर उसका धरातल समुद्र के पानी के तल से भी नीचा है। ऐसे स्थानों पर समुद्र के किनारे एक बहुत पक्की दीवार बना दी गई है ताकि तूफान की लहरें दीवार से टकरा कर पीछे हट जायें। यदि यह दीवार न हो तो पानी खेतों और गांवों को बहा ले जाए और वहां रहना असंभव हो जाए। यदि कभी ज़ोरदार लहरों की टक्कर से दीवार का कोई भाग टूट जाता है तो उसे उसी समय ठीक कर दिया जाता है।

दीवार के पास के छोटे-से गांव में एक गरीब मजदूर रहता था। उसके लड़के का नाम था पीटर। पीटर प्रतिदिन स्कूल जाता था। एक दिन वह स्कूल जाते-जाते रास्ते में खेलता रह गया और जब स्कूल पहुंचा तो बारह बज रहे थे। मास्टर जी ने उसे छुट्टी के बाद दो घंटे तक स्कूल में बैठ कर पाठ याद करने की सजा दी। शाम को छः बजे छुट्टी मिली तब उसके सारे साथी जा चुके थे।

पीटर को समुद्र के किनारे बनी दीवार पर से होकर जाना पड़ता था। आज वह पहले की अपेक्षा तेज़ी से चल रहा था। सूर्य अस्त होने वाला था। जब वह दीवार पर से जा रहा था तो उसने देखा कि नीचे दीवार में एक छोटा-

सा छेद हो गया है और उसमें से पानी की पतली-सी धार बह रही है। पहले तो उसने इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया किन्तु बाद में कुछ ही पग चलने पर रुक गया और सोचने लगा—यदि इस छेद को बन्द न किया गया तो यह धीरे-धीरे बढ़ जाएगा और फिर·····दीवार टूट जायेगी। इसके बाद क्या होगा, यह सोचने में उसे ज़रा भी देर नहीं लगी। 'मुझे इसे बन्द करना चाहिए', वह अपने से ही कह उठा।

यह सोचकर वह छेद के पास गया और मिट्टी थोप कर उसे बन्द करने का यत्न करने लगा। वह बार-बार मिट्टी थोपता किन्तु पानी उसे बहा ले जाता। वह समझ नहीं पा रहा था कि उसे कैसे बन्द करे? झट से उसे एक उपाय सूझा। इस प्रसन्नता से उसका चेहरा खिल उठा। वह जमीन पर बैठ गया और उसने अपना हाथ जोर से उस छेद पर रख दिया। पानी बन्द हो गया।

उसे वहां बैठे घंटों हो गए। वह सोचता अभी कोई इस रास्ते निकलेगा

ग्रौर उसे सारी बात बता कर, दीवार ठीक करने का प्रबन्ध हो सकेगा। किन्तु उसे कोई ग्राता-जाता दिखाई न दिया। काफी ग्रंधेरा हो गया था। वह भूखा ग्रौर घबराया हुग्रा था। उसके पास कोई गर्म कपड़ा भी नहीं था। कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। किन्तु उसने एक बहादुर की तरह ग्रपने हाथ को जोर से छेद पर रखे रखा ग्रौर सवेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा।

उधर पीटर के घर न पहुंचने पर उसके माता-पिता ने उसके सहपाठियों से पूछा तो उन्होंने कह दिया कि स्कूल में देर से पहुंचने के कारण उसे चार के बजाय छः बजे छुट्टी मिलनी थी। वह स्कूल में बैठा पढ़ रहा था। माता-पिता ने सोचा कि शायद शाम हो जाने के कारण मास्टर जी ने ग्रकेले भेजना ठीक न समझा हो ग्रौर ग्रपने पास ही ठहरा लिया हो। उन्हें क्या पता था कि उनका लाड़ला बेटा भूखा-प्यासा, सर्दी से ठिठुरा हुग्रा, ग्रंधेरी रात में ग्रकेला दीवार के छेद पर हाथ रखे हुए बैठा है ग्रौर ग्रपनी जान को खतरे में डाल कर सारे गांव को बचाने में लगा हुग्रा है।

बेचारा पीटर एक ग्रासन में बैठा रहने के कारण बुरी तरह ग्रकड़ गया था। उसका सारा शरीर सुन्न हो रहा था। वह कभी तारों की तरफ देखता, ग्रौर कभी दीवार की तरफ। उसने पूर्व की ग्रोर देखा। वहां प्रभात होने के लक्षण देख कर उसे कुछ ग्राशा बंधी।

पौ फटते ही उसने दो ग्रादमियों को दीवार पर ग्राते देखा। उनमें से एक की नजर पीटर पर पड़ गई। वह झट पीटर के पास पहुंचा, ग्रौर देखते ही सारा मामला समझ गया। उसने ग्रपना गर्म कोट पीटर को ग्रोढ़ा दिया ग्रौर दूसरे साथी को बुलाकर सारी बात समझाई। उनमें से एक ने पीटर को कंधे पर उठाया ग्रौर उसके घर की तरफ चल दिया ग्रौर दूसरा तेजी से दौड़ कर दीवार की मरम्मत करने वालों को बुला लाया। जब पीटर के माता-पिता ने ग्रपने बेटे के साहस की कहानी सुनी तो फूले नहीं समाये। इस छोटे से बालक ने सारे गांव वालों की जान बचा ली थी।

लम्बार्डी का वीर बालक

आज से कोई सौ वर्ष पहले की बात है, इटली के उत्तर भाग पर आस्ट्रिया वालों का अधिकार था। इटली के इस भाग में लम्बार्डी नाम का एक प्रदेश था। आस्ट्रिया के अत्याचारों से दुखी होकर यहां के निवासियों ने विद्रोह कर दिया और फ्रांस वालों की सहायता से आस्ट्रिया वासियों को दो-एक युद्धों में बुरी तरह हरा दिया।

एक दिन सवेरे इटली के कुछ घुड़सवार शत्रु की खोज में जा रहे थे। राह में एक जगह उन्हें एक घर मिला, जिसके द्वार पर एक लड़का खड़ा था। उसकी उमर १२ वर्ष के लगभग होगी। घर के निवासी तो डर के मारे पहले ही भाग गए थे। हां, उस घर की एक खिड़की में लगा इटली का झण्डा जरूर हवा में उड़ रहा था। उस लड़के को अकेला खड़ा पाकर सवारों के अफसर ने अपना घोड़ा रोक कर उससे पूछा :

अफसर—तुम यहां क्यों रह गए ? घर वालों के साथ क्यों नहीं चले गए ?

लड़का—मेरा कोई है ही नहीं। अनाथ हूं। मैं लड़ाई देखने को रह गया हूं।

अफसर—तुमने किसी आस्ट्रिया वाले को इधर से जाते देखा है।

लड़का—तीन दिन से एक भी नहीं दिखाई पड़ा।

यह अफसर अपने घोड़े से उतर पड़ा। अपने साथ के सवारों को भी उसने वहां ठहरने की आज्ञा दी। इसके बाद उस मकान में घुस गया और उसकी छत पर चढ़ कर चारों ओर देख-दाख करने लगा। इसके बाद वह नीचे उतर आया और दरवाजे पर आ खड़ा हुआ। वहां आकर उसने लड़के से पूछा—

अफसर—तुम अच्छी तरह देख सकते हो ?

लड़का बहुत अच्छी तरह। एक मील दूर उड़ती चिड़िया को मैं देख लेता हूं।

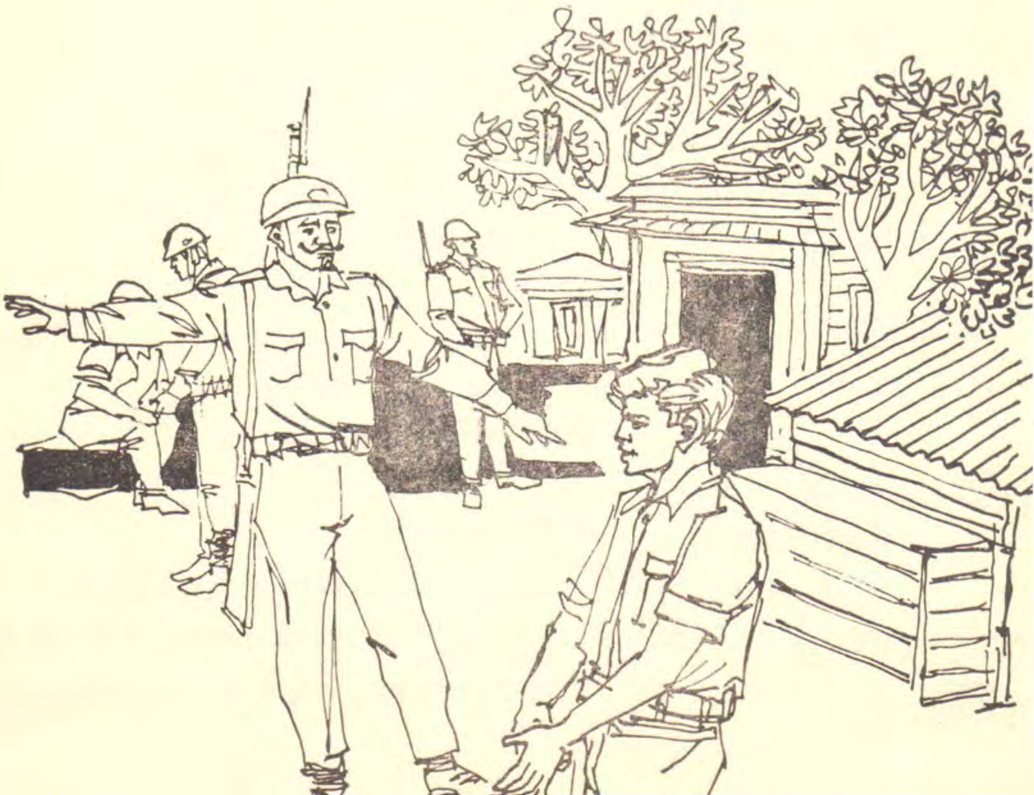

अपने सामने के ऊंचे वृक्षों को दिखाकर अफसर ने कहा—क्या तुम इस वृक्ष पर चढ़ सकते हो ?

लड़का—बात की बात में इसकी फुनगी पर जा पहुंचूँगा।

अफसर—वहां से यदि तुम्हें शत्रुओं की सोना, गर्द-गुबार, संगीन या तोपों की चमक आदि जो कुछ भी दिखाई पड़ेगा, क्या तुम उसका हाल मुझे बता सकोगे ?

लड़का—बेशक।

अफसर—इस परिश्रम के लिए क्या लोगे ?

लड़का—क्या लूंगा। कुछ भी नहीं। मैं भी लम्बार्डी का ही निवासी हूं।

लड़के ने जूते निकाले। और गिलहरी की तरह वृक्ष पर चढ़ गया। बात की बात में उसकी चोटी पर जा पहुंचा।

नीचे से अफसर ने कहा—अच्छा सीधा अपने सामने देखो। कुछ दिखाई देता है ?

लड़का—सड़क पर दो घुड़सवार।

अफसर—कितनी दूर ?

लड़का—आधा मील।

अफसर—क्या वे आ रहे हैं ?

लड़का—नहीं

अफसर—अच्छा, दाहिनी ओर क्या दिखाई पड़ता है ?

लड़का—कब्रिस्तान के पास वृक्षों के बीच कुछ चमक-सी है। मालूम होता है, संगीनों की चमक है।

अफसर—क्या आदमी भी दीख पड़ते हैं ?

लड़का—नहीं। पर वृक्षों के पीछे खेतों में छिपे हुए मालूम पड़ते हैं।

इसी समय एक गोली सनसनाती हुई आकर घर के पिछवाड़े गिर पड़ी। अफसर ने चिल्ला कर कहा—लड़के उतर आओ। उन्होंने तुम्हें देख लिया है।

अब मुझे किसी बात की जरूरत नहीं है। उतर आओ।

लड़के ने कहा—मैं डरा नहीं हूं।

अफसर ने कहा—अच्छा बाईं ओर क्या है?

लड़का—बाईं ओर?

अफसर—हां बाईं ओर।

लड़का बाईं ओर देखने को झुका ही था कि एक गोली सनसनाती हुई हवा में निकल गई।

अफसर ने चिल्लाकर कहा—उतर आओ।

लड़का—मैं तुरन्त उतर आऊंगा, परन्तु मैं इस वृक्ष की आड़ में हूं। बाईं ओर का हाल जानना अभी बाकी है।

अफसर—हां पर तुम उतर आओ।

उसने बाईं ओर झुक कर देखा और बोला—बाईं ओर एक छोटा गिरजाघर है, मेरी समझ में—

लड़के की बात पूरी नहीं हो पाई थी कि सनसनाती एक गोली आकर उसे लगी। क्षण भर के लिए वह वृक्ष की शाखा पर दबक रहा। फिर जमीन पर आ गिरा।

अफसर के मुंह से एक चीख निकल गई। बेचारा लड़का उसके आगे चित्त पड़ा था। उसके बाईं ओर से खून बह रहा था। यह हाल देखकर सारजेंट और दो सवार भी दौड़े आए। अफसर ने उसके शर्ट के बटन खोल दिए। गोली उसके फेफड़े में लगी थी। उसने कहा, बेचारा मर गया। सारजेंट ने कहा, नहीं अभी मरा नहीं है।

इतने में उसने एक बार आंखें खोलीं और अफसर की ओर ताकने लगा। पर उसके प्राण निकल गए।

उसकी दशा देखकर अफसर को बड़ा दुःख हुआ। वह उठ खड़ा हुआ और घर से झंडा उठा लाया। उससे लड़के को लपेट दिया। सिर्फ उसका मुंह

ही खुला रखा । फिर उसने सारजेंट से कहा यह सिपाही की मौत मरा है। इस लिए इसे सिपाही दफन करेंगे । वह अपनी टुकड़ी लेकर लौट पड़ा । इसके बाद शाम को वहां एक सेना आ पहुंची।

सेना ने लड़के की लाश को सलामी दी । ज्यों-ज्यों एक-एक करके सैनिक इसके पास से निकलते गए, सभी ने इस पर पुष्प-वर्षा की। इस प्रकार इसवीर बालक का इन लोगों ने यथोचित सम्मान किया । वास्तव में इसने अपने प्यारे देश पर अपनी जान निछावर कर दी थी।

० ० ०